International Journal of Applied Research 2015; 1(6): 239-241

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(6): 239-241
www.allresearchjournal.com
Received: 28-03-2015
Accepted: 30-04-2015

Dr. Sanjeet Kumar Tiwari
Assistant Professor School of Education, MATS University, Aarang, Raipur (C.G)

Dr. Jubraj Khamari
Assistant Professor School of Education, MATS University, Aarang, Raipur (C.G)

Ms. Sameena Quraishi
Research Scholar (M. Phil. Education) School of Education, MATS University, Aarang, Raipur (C.G)

Correspondence:
Dr. Sanjeet Kumar Tiwari
Block No. 21/404, Ashoka Ratan, Khamardih, Shankar Nagar, Raipur, (C.G.) 492007

कक्षा 11वीं के छात्रावासी तथा गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता पर एक अध्ययन

Dr. Sanjeet Kumar Tiwari, Dr. Jubraj Khamari, Ms. Sameena Quraishi

संक्षेपीकरण (Abstract)
किसी भी तरह की परीक्षा व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण घड़ी होती है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति चिंता व तनाव की स्थितियों से घिरा रहता है। परीक्षा चिंता से ग्रसित छात्रों के मन मस्तिष्क में परीक्षा से संबंधित कई प्रष्न कुलबुलाते रहते हैं। जैसे कि मैं परीक्षा की तैयारी कैसे कर पाऊँगा? मेरी किताबों की कमी कैसे पूरी होगी? प्रभावपूर्ण नोट्स कैसे बना पाऊँगा? इसमें कोई मेरा सहयोग देगा कि नहीं इत्यादि। ये विचार छात्रों के मन में परीक्षा की तिथि की घोषणा की जानकारी मिलने के दिन से लेकर परीक्षा के समाप्त होने की तिथि तक लगातार उसे हवोत्साहित करते रहते हैं। इन स्थितियों में षिक्षक, मार्गदर्षक, पिता, भाई–बहन, मित्र, पुस्तकालय अथवा उसका अपना आत्मविष्वास ही उसे इन व्याधियों से निकाल पाता है। जिसमें उन्हें सार्थक परिणाम भी हासिल होते हैं।

महत्वपूर्ण शब्द (Key Words):- कक्षा 11वीं, छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी, विद्यार्थी, परीक्षा चिंता।

1. परिचय (Introduction)
परीक्षा में अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए छात्रों में परीक्षा तिथि से महीने पूर्व परीक्षा की सफल तैयारी की चिंता का भाव उत्सर्जित होता रहता है। परीक्षा की चिंता का बोझ छात्रों के मस्तिष्क पर आना एक स्वाभाविक क्रिया है। इससे उनके सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रभाव देखने को मिलते हैं। जैसे उच्च एवं निम्न परीक्षा चिंता स्तर प्रत्येक व्यक्ति के लिए हानिकारक है, जो कि नकारात्मक प्रभाव डालते है। लेकिन सामान्य परीक्षा चिंता प्रत्येक विद्यार्थियों के जीवन में आवष्यक समझी जाती है। क्योंकि उच्च परीक्षा चिंता स्तर व्यक्ति को विचलित कर देता है। एवं निम्न परीक्षा चिंता स्तर उसे लापरवाह एवं असावधान बना देती है। लेकिन जब विद्यार्थी का परीक्षा चिंता स्तर सामान्य होता है, तो वह परीक्षा में सफल हो जाता है, इसलिए परीक्षा चिंता को आवष्यक मात्रा में उचित माना जाता है।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review Related Literature)
संबंधित साहित्य के विष्लेषणात्मक अध्ययन के बिना शोधकर्त्ता अंधकार में भटकता रहेगा और संभवतः जो कार्य हो चुके हैं, उन्हें व्यर्थ में दुहरायेगा। अतएव समय, ऊर्जा तथा साधनों की बचत के लिए आवष्यक है, कि सभी उपलब्ध साहित्य का विस्तृत व गहन अध्ययन किया जाए।

- सुब्बाराजू एवं भारती (1998) के अनुसार :– "परिवार के आकार एवं प्रकार पर चिंता के प्रभाव पर अध्ययन किया। इसका निष्कर्ष पाया कि परिवार में यदि लोगों की संख्या ज्यादा है, तो वहाँ के बच्चों में चिंता का प्रभाव अधिक देखा गया है, जबकि जहाँ परिवार में कम लोग है, उनके बच्चों में चिंता का प्रभाव कम देखा गया है।"
- शर्मा (1998) के अनुसार :– "उच्च व निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के मध्य परीक्षा चिंता पर एक अध्ययन।" निष्कर्ष पाया, कि –

1. निम्न उपलब्धि धारक विद्यार्थी उच्च उपलब्धि धारकों से अधिक चिंता में पाए गए।
2. लड़कियों में लड़कों की अपेक्षा अधिक परीक्षा चिंता पाई गई।

3. उद्देष्य एवं परिकल्पना (Objectives And Hypothesis)
अध्ययन का उद्देष्य (Objective of the Study)
- छात्रवासी तथा गैर छात्रावासी कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता का तुलनात्मक अध्ययन।
- छात्रावासी तथा गैर छात्रावासी कक्षा 11वीं के छात्रों की परीक्षा चिंता का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना (Hypothesis of the Study)

परिकल्पना H_1	"छात्रावासी तथा गैर छात्रावासी कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।"
परिकल्पना H_2	"छात्रावासी तथा गैर छात्रावासी कक्षा 11वीं की छात्राओं की परीक्षा चिंता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।"
परिकल्पना H_3	"छात्रावासी तथा गैर छात्रावासी कक्षा 11वीं के छात्रों की परीक्षा चिंता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।"

4. प्रणाली एवं प्रक्रिया (Methodology And Procedure)

विधि (Method) :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 11वीं के छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों का चयन उद्देषीय न्यादर्ष विधि द्वारा किया गया है।

जनसंख्या (Population) :– इस शोध अध्ययन के लिए शोधकर्त्ता ने दुर्ग ब्लॉक के कक्षा 11वीं के छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों का चयन किया है।

न्यादर्ष (Sampling) :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में उद्देषीय न्यादर्ष विधि द्वारा कक्षा 11वीं में अध्ययनरत् 50 छात्रावासी विद्यार्थियों का चयन तथा 50 गैर छात्रावासी विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

विस्तार एवं सीमांकन (Scope And Delimitation) :– यह अध्ययन केवल कक्षा 11वीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों तक ही सीमित है। इसमें केवल शासकीय विद्यालयों के तथा शासकीय छात्रावास के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

उपकरण (Tools) :– प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता को जानने हेतु डॉ. मधु अग्रवाल एवं वर्षा कौषल द्वारा निर्मित परीक्षा चिंता मापनी (SEAT-AK) (1985) का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधि (Statistical Techniques) :– इस अध्ययन में मध्यमान, प्रमाणित विचलन एवं टी–मूल्य का प्रयोग किया गया है।

5. विष्लेषण एवं चर्चा (Analysis And Discussion)

प्रमाणित परिकल्पनाएँ (Verification of Hypothesis)

परिकल्पना H_1 "छात्रावासी तथा गैर छात्रावासी कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।"
प्राप्त आंकड़ों द्वारा मध्यमान, प्रमाणित विचलन ज्ञात कर 'टी' मान द्वारा सार्थकता स्तर ज्ञात किया गया, जिसका विवरण अग्रलिखित तालिका में प्रदर्षित है –

क्रं.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणित विचलन (SD)	टी मूल्य (t)
1	छात्रावासी विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता	50	19.00	6.78	1.94
2	गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता	50	21.26	4.51	
df = 98, P > 0.05 सार्थक अंतर नहीं है।					

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है, कि छात्रावासी विद्यार्थियों में परीक्षा चिंता का मध्यमान (M) = 19.00 एवं प्रमाणिक विचलन (D) = 6.78 प्राप्त हुआ। इस प्रकार गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के लिए प्रदत्तों की संख्या (N) = 50, मध्यमान (M) = 21.26 एवं प्रमाणिक विचलन (SD) = 4.51 प्राप्त हुआ। तथा दोनों समूहों के लिए 'टी' मूल्य (t) का मान 1.94 प्राप्त हुआ। जो कि df = 98 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर यह निरर्थक अंतर दर्षाता है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिणाम :– यह परिणाम इस बात की पुष्टि करता है कि "छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता" में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

परिकल्पना H_2 "कक्षा 9वीं के अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।"
प्राप्त आंकड़ों द्वारा मध्यमान, प्रमाणित विचलन ज्ञात कर 'टी' मान द्वारा सार्थकता स्तर ज्ञात किया गया, जिसका विवरण अग्रलिखित तालिका में प्रदर्षित है –

क्रं.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणित विचलन (SD)	टी मूल्य (t)
1	अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की परीक्षा चिंता	20	26	116.27	0.26
2	अशासकीय विद्यालयों के छात्राओं की परीक्षा चिंता	20	17.4	76.02	
df = 38, P > 0.05 सार्थक अंतर नहीं है।					

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है, कि अशासकीय विद्यालयों के छात्रों के लिए प्रदत्तों की संख्या (N) = 20, मध्यमान (M) त्र 26 एवं प्रमाणिक विचलन (SD) = 116.27 प्राप्त हुआ। इस प्रकार अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं के लिए प्रदत्तों की संख्या (N) = 20, मध्यमान (M) = 17.4 एवं प्रमाणिक विचलन (SD) = 76.02 प्राप्त हुआ। तथा दोनों समूहों के लिए 'टी' मूल्य (t) का मान 0.68 प्राप्त हुआ। जो कि df = 38 के लिए 0.01 सार्थकता स्तर पर यह निरर्थक अंतर दर्षाता है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिणाम :– यह परिणाम इस बात की पुष्टि करता है कि "अषासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता" में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

परिकल्पना H_2 "छात्रावासी तथा गैर छात्रावासी कक्षा 11वीं की छात्राओं की परीक्षा चिंता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।"
प्राप्त आंकड़ों द्वारा मध्यमान, प्रमाणित विचलन ज्ञात कर 'टी' मान द्वारा सार्थकता स्तर ज्ञात किया गया, जिसका विवरण अग्रलिखित तालिका में प्रदर्षित है –

क्रं.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणित विचलन (SD)	टी मूल्य (t)
1	छात्रावासी छात्राओं की परीक्षा चिंता	25	22.4	6.10	1.00
2	गैर छात्रावासी छात्राओं की परीक्षा चिंता	25	20.12	7.16	
df = 48, P > 0.05 सार्थक अंतर नहीं है।					

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है, कि छात्रावासी छात्राओं के लिए प्रदत्तों की संख्या (N) = 25, मध्यमान (M) = 22.4 एवं प्रमाणिक विचलन (D) = 6.10 प्राप्त हुआ। इस प्रकार गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के लिए प्रदत्तों की संख्या (N) = 25, मध्यमान (M) = 20.12 एवं प्रमाणिक विचलन (D) = 7.16 प्राप्त हुआ। तथा दोनों समूहों के लिए 'टी' मूल्य (t) का मान 1.00 प्राप्त हुआ। जो कि df = 48 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर यह निरर्थक अंतर दर्षाता है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिणाम :– यह परिणाम इस बात की पुष्टि करता है कि "छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्राओं की परीक्षा चिंता" में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

परिकल्पना H_3 "छात्रावासी तथा गैर छात्रावासी कक्षा 11वीं के छात्रों की परीक्षा चिंता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।"
प्राप्त आंकड़ों द्वारा मध्यमान, प्रमाणित विचलन ज्ञात कर 'टी' मान द्वारा सार्थकता स्तर ज्ञात किया गया, जिसका विवरण अग्रलिखित तालिका में प्रदर्षित है –

क्रं.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणित विचलन (SD)	टी मूल्य (t)
1	छात्रावासी छात्रों की परीक्षा चिंता	25	20.76	7.97	0.68
2	गैर छात्रावासी छात्रों की परीक्षा चिंता	25	17.24	5.25	
df = 48, P > 0.05 सार्थक अंतर नहीं है।					

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है, कि छात्रावासी छात्रों के लिए प्रदत्तों की संख्या (N) = 25, मध्यमान (M) = 20.76 एवं प्रमाणिक विचलन (SD) = 7.97 प्राप्त हुआ। इस प्रकार गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के लिए प्रदत्तों की संख्या (N) = 25, मध्यमान (M) = 17.24 एवं प्रमाणिक विचलन (SD) = 5.25 प्राप्त हुआ। तथा दोनों समूहों के लिए 'टी' मूल्य (t) का मान 0.68 प्राप्त हुआ। जो कि df = 48 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर यह निरर्थक अंतर दर्षाता है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिणाम :– यह परिणाम इस बात की पुष्टि करता है कि "छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की परीक्षा चिंता" में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

6. संदर्भित ग्रंथ (References)

1. अस्थाना, विपिन एवं अस्थाना, श्वेता (2005) – "मनोविज्ञान और षिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन", पुस्तक मंदिर, आगरा – 2.
2. शर्मा, आर.ए. (2013) – "शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया", आर.लाल बुक डिपो, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ, 2–4.
3. अजवानी, जे.सी. एवं शर्मा, आर.ए. (2004) – "टेस्ट एनएक्जाइटी इन रिलेषन टू एकेडेमीक एचीवमेंट", इंडियन जरनल ऑफ साइकोमेट्री एण्ड एजुकेशन, 242–244.
4. पाठक, पी.डी. (2006) – " शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, मेरठ, 196कृ
5. पाठक, पी.डी. एवं जी.एस.डी. (1985) – " शिक्षा मनोविज्ञान" लायन बुक डिपो, मेरठ, 220.
6. गैरेट, हेनरी ई. (1987) – "षिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, 160.
7. पंचौरी, गिरीश – " शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार", अग्रवाल पब्लिकेषन, आगरा, 65–67.
8. डॉ. सक्सेना, एन.आर. एवं चतुर्वेदी, षिक्षा – "उदीयमान भारतीय समाज में षिक्षक", आर.लाल. बुक डिपो, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ, 7–12.
9. सिंघल रितु एवं सिंह रचना –"इफेक्ट ऑफ एनएक्जाइटी एण्ड डीफरेन्ट एजुकेषनल बोर्ड अपॉन, इमोशनल कम्पीटेंस द हायर सेकेण्डरी स्टुडेन्स", कम्युनिटी गाईडेन्स ऑफ रिसर्च, 205.
10. वोल्फ, एफ.लीसा – "द कनसिक्वेन्स ऑफ कनसिक्वेन्स मोटी वेशन, एनएक्जाइटी एण्ड टेस्ट परफॉरमेन्स एटलाइड मेजरमेन्ट इन एजुकेषन, 227.
11. राय, पारसनाथ (1978) – "अनुसंधान का परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेषन, आगरा, 28.